



न्यायालय

सहायक कलक्टर / उपखण्ड अधिकारी

धोरीमन्ना-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -भागीरथराम आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-102/2023

दर्ज तिथि:-20.10.2023


1. शान्ताबेन पुत्री रावताराम पत्नी मोतीभाई
जाति मेघवाल निवासी बोर चारणान, पटवार हल्का बोर चारणान, तहसील धोरीमन्ना
जिला बाड़मेर हाल निवासी पावडासन तहसील थराद, जिला बनासकाण्ठा, गुजरात
.....वादी

बनाम

1. प्रह्लादराम पुत्र रावताराम
2. रूखमों पत्नी रावताराम
3. अचलाराम पुत्र गणेशाराम
4. फुसाराम पुत्र गणेशाराम
5. हेमन्त कुमार पुत्र गणेशाराम
6. नेनूदेवी पत्नी गणेशाराम
7. उदाराम पुत्र हंसाराम
8. भूराराम पुत्र हंसाराम
9. रतनाराम पुत्र हंसाराम
10. जुगताराम पुत्र पुनमाराम
11. तेजाराम पुत्र पुनमाराम
12. लेहरों पत्नी पुनमाराम
13. भेराराम पुत्र पनाराम
14. राजुराम पुत्र पनाराम
15. लक्ष्मी पत्नी पनाराम (फौत व कायम मुकाम पहले से रेकर्ड पर होने से डिलीट)
जाति मेघवाल निवासी बोर चारणान, पटवार हल्का बोर चारणान, तहसील धोरीमन्ना
16. पनाराम पुत्र रूगाराम (फौत के कायम मुकाम प्रतिवादीगण संख्या 13 से 15)
17. शाखा प्रबन्धक, एसबीआई शाखा गुडामालानी
18. राज्य सरकार जरिये तहसीलदार धोरीमन्ना
19. राज्य सरकार जरिये उप पंजीयक धोरीमन्ना

.....प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता
वादी:-श्री रामनिवास विश्नोई
प्रतिवादी:-एकतरफा


सहायक कलक्टर
SDO धोरीमन्ना




राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88, 188
राजरथान काश्तकारी अधि0-1955

-:निर्णय:-

निर्णय तिथि:-11.07.2025

1. आज यह पत्रावली वाद पत्र बाबत् इस्तकराहक अन्तर्गत धारा-88,188 राजरथान काश्तकारी अधिनियम-1955 का वास्ते निर्णय हेतु पेश हुई। वाद पत्र का सूक्ष्म वृत्तान्त इस प्रकार से है कि वादीनी ने निवेदन किया गया कि वादीनी व प्रतिवादी संख्या 1 से 15 की पैतृक संयुक्त खातेदारी आराजी ग्राम बोर चारणान पटवार हल्का बोर चारणान तहसील धोरीमना के खसरा संख्या 122/11.5416 है0, 177/2.1044 है0, 254/0.0486 है0, 255/0.0486 है0, 256/6.5316 है, 256/2/4.1763 है0 तथा ग्राम जाणियों की ढाणी पटवार क्षेत्र बोर चारणान के खेत खसरा संख्या 15/10.9103 है0 किस्म वा.सोयम का आया हुआ है। वादीनी के दादा रूगा पुत्र बौका के तीन पुत्र रावताराम,पनाराम व गणेशाराम है। तथा रावताराम के 3 वारीश प्रहलादराम,वादिनी शान्तावेन व रूखमों है। वादग्रस्त आराजी वक्त सेटलमेन्ट के समय वादीनी के दादा रूगा पुत्र बौका कौम भांवी के नाम दर्ज हुई थी। वादीनी क दादा रूगा पुत्र बौका फौत होने पर वादीनी के पिता रावताराम के नाम दर्ज हुई। वादिनी के पिता रावताराम के फौत होने पर वर्तमान में उक्त विवादित आराजी प्रतिवादी संख्या 01 से 02 के नाम दर्ज हुई। तथा वादग्रस्त आराजी में प्रतिवादी संख्या 01 व 02 का 1/12, 1/12 हिस्सा होने से वादीनी का 1/18 वां हिस्सा आता है।
2. इस प्रकार उक्त खातेदारी आराजी पैतृक आराजी है। वादीनी व प्रतिवादी संख्या 1 से 16 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत हिन्दू के अंतर्गत आने के कारण हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित रखते हैं। इसी अनुसार वादीनी वर्तमान में मौके पर काबिज काश्त है। वर्तमान में प्रतिवादी संख्या 01 से 16 उक्त आराजी को भू माफियाओं को बेचान करने पर आमामा है। अतः उक्त आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादीनी को खातेदार घोषित किया जाकर प्रतिवादी को वादीनी की खातेदारी आराजी पर दखलअंदाजी करने से रोकने हेतु रथाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जाने का निवेदन किया।
3. वाद पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर प्रतिवादी को जरिये नोटिस तलब किया गया। प्रकरण में प्रतिवादीगण संख्या 1 से 16 के सम्मन बावजूद रजिस्टर्ड तामिल अनुपस्थित रहने के कारण उनके विरुद्ध एकतरफा कार्यवाही अमल में लाई गई। तत्पश्चात पत्रावली वादी साक्ष्य हेतु नियत करने पर वादीनी द्वारा साक्ष्य के रूप में निम्न शपथ पत्र, गवाह एवं दस्तावेज प्रदर्श करवाए।

दस्तावेज	संवत्/विवरण	प्रदर्श
खतौनी बन्दोवस्त	खाता संख्या 46 मौजा मौजा बोर चारणन संवत् 2012 से 2031	प्रदर्श-01
नामान्तकरण	नामान्तकरण संख्या 124 मौजा बोर चारणान दिनांक 21.04.2081	प्रदर्श-02
नामान्तकरण	नामान्तकरण संख्या 334 मौजा बोर चारणान दिनांक	प्रदर्श-03


राजस्व वाद अन्तर्गत
राजरथान काश्तकारी अधि0-1955

20.05.2013		
जमाबंदी	खाता संख्या 31 मौजा बोर चारणान	प्रदर्श-04
नक्शा	खेत खसरा संख्या 122 मौजा बोर चारणान	प्रदर्श-05
नक्शा	खेत खसरा संख्या 177 मौजा बोर चारणान	प्रदर्श-06
नक्शा	खेत खसरा संख्या 254 मौजा बोर चारणान	प्रदर्श-07
नक्शा	खेत खसरा संख्या 255 मौजा बोर चारणान	प्रदर्श-08
नक्शा	खेत खसरा संख्या 256 मौजा बोर चारणान	प्रदर्श-09
नक्शा	खेत खसरा संख्या 256/2 मौजा बोर चारणान	प्रदर्श-10
जमाबंदी	खाता संख्या 32 मौजा जाणियों की ढाणी	प्रदर्श-11
नक्शा	खसरा संख्या 15 मौजा जाणियों की ढाणी	प्रदर्श-12
पैन कार्ड	वादिनी शान्ता बेन BRNPV5323E	प्रदर्श-13
पैन कार्ड प्रतिलिपि	वादिनी शान्ता बेन BRNPV5323E	प्रदर्श -13 ए
आधार कार्ड	वादिनी शान्ता बेन का आधार कार्ड 389252818238	प्रदर्श- 14
आधार कार्ड	वादिनी शान्ता बेन का आधार कार्ड 389252818238	प्रदर्श- 14ए

1. प्रकरण में वादिनी द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न गवाह प्रस्तुत किए-

नाम	जाति	निवासी
शान्ताबेन पुत्री रावताराम	मेघवाल	बोर चारणान
सन्धाराम पुत्र जीयाराम	मेघवाल	बोर चारणान


4. प्रकरण में वादिनी व प्रतिवादीगण के मध्य विवाद का कोई बिन्दु पत्रावली पर नहीं होने के कारण प्रकरण का प्रथम सुनवाई पर निर्णय किया जाना उचित प्रतीत होता है। इस संबंध में सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-15 नियम-01 में प्रावधान बनाये गये हैं। जिसका उद्धरण इस प्रकार है:-

ORDER XV

Disposal of the Suit at the first hearing

1. Parties not at issue.—

(1) Where at the first hearing of a suit it appears that the parties are not at issue on any question of law or of fact, the Court may at once pronounce judgment.


सहायक कलेक्टर
SDO धोरीमना



5. पत्रावली पर विद्वान अधिवक्ता वादीनी की बहस सुनी गई। दौराने बहस विद्वान अधिवक्ता द्वारा वाद पत्र में अंकित बिन्दुओं को मात्र दौहराते हुए आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादीनी को खातेदार घोषित किया जाकर प्रतिवादी को वादीनी की खातेदारी आराजी पर दखलअंदाजी करने से रोकने हेतु स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जाने का निवेदन किया।
6. मैनें विद्वान अधिवक्ता वादीनी की बहस पर मनन किया गया एवं पत्रावली पर संलग्न दस्तावेजात् का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया। प्रकरण में वादीनी द्वारा दो निम्न अनुतोष निवेदित किये हैं:-
1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी संख्या 01 व 02 के साथ वादीनी को सहखातेदार घोषित किया जावे।
 2. वादीनी के हक हिस्से में किसी प्रकार का परिवर्तन, हस्तक्षेप व बेचान, रहन नहीं करने/कराने तथा राजस्व रिकॉर्ड व मौके की यथास्थिति बनाए रखने हेतु स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जावे।
7. पत्रावली पर अनुतोषवार विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। सर्वप्रथम अनुतोष संख्या 01 जो कि निम्न प्रकार है:-
1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी संख्या 01 से 02 के साथ वादीनी को सहखातेदार घोषित किया जावे।
8. प्रकरण में प्रथम अनुतोष राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 से संबंधित है। अतः सर्वप्रथम राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:-

15. Khatedar tenants— (1) Subject to the provisions of section 16 and clause (d) of Sub-section (1) of section 180 every person who, at the commencement of this Act, is a tenant of land otherwise than as a sub-tenant or a tenant of Khudkasht or who is, after the commencement of this Act, admitted as a tenant otherwise than as a sub-tenant or tenant of Khudkasht or an allottee of land under, and in accordance with, rules made under section 101 of the Rajasthan Land Revenue Act, 1956 (Rajasthan Act 15 of 1956) or who acquires Khatedari rights in accordance with provisions of this Act or of the Rajasthan Land Reforms and Resumption of Jagir Act, 1952 (Rajasthan Act VI of 1952) or of any other law for the time being in force shall be a Khatedar tenant and shall, subject to the provision of this Act be entitled to all the rights conferred; and be subject to all the liabilities imposed on Khatedar tenants by this Act:

Provided that no Khatedari rights shall accrue under this section to any tenant, to whom land is or has been let out temporarily in Gang Canal, Bhakra, Chambal or Jawai project area or any other area notified in this behalf by the State Government.



[Handwritten Signature]
 सहायक कलेक्टर
 SDO धौरीमना

(2) Notwithstanding anything contained in sub-section (1) Khatedari rights shall not accrue there under to any person to whom land had been let out before the commencement of this Act by the State Government in furtherance of the Grow More Food Campaign or under some special order subject to some specified conditions or in pursuance of some statutory or non-statutory rules and who shall have, before such commencement, made a default in securing the objective of such campaign or a breach of any such order, condition or rule.

(3) Any person referred to in sub-section (2) may, within three years from the date of commencement of this Act and on payment of a court-fee of twenty five naye paise apply to the Assistant Collector having jurisdiction praying for a declaration that acquired Khatedari right under sub-section (1) in the land held by him.

(4) Such application may be made on any of the following grounds, namely:

(a) that the land held by him was let out to him after the commencement of this Act.

(b) that it was not let out to him in any of the circumstances specified in sub-section (2).

(c) that when the- land was so let out to him he was not apprised of such circumstances.

(d) that he had, before such commencement made no default or breach of the nature specified in sub-section (2).

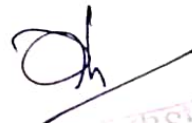
(5) The Assistant Collector shall, upon the presentation of an application under sub-section (3), make inquiry in the prescribed manner and afford reasonable opportunity to the applicant of being heard and shall, if he does not reject the application, declare the applicant to have become Khatedar tenant of his holding in accordance with and subject to the provisions of the subsection (1).



7. प्रकरण में वादीनी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 के अंतर्गत हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत अधिकार सृजित होने के आधार पर खातेदार के रूप में दर्ज होने का अनुतोष चाहा गया है। इस संबंध में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 का प्रकरण में अवलोकन किया जाना आवश्यक है जिसके प्रासंगिक विवरण का उद्धरण इस प्रकार है:-

6. Devolution of interest in coparcenary property.—

(1) On and from the commencement of the Hindu Succession (Amendment) Act, 2005 (39 of 2005), in a


सहायक कलेक्टर
SDO धोरीमना

Joint Hindu family governed by the Mitakshara law, the daughter of a coparcener shall,—

(a) by birth become a coparcener in her own right the same manner as the son;

(b) have the same rights in the coparcenary property as she would have had if she had been a son;

(c) be subject to the same liabilities in respect of the said coparcenary property as that of a son, and any reference to a Hindu Mitakshara coparcener shall be deemed to include a reference to a daughter of a coparcener:


Provided that nothing contained in this sub-section shall affect or invalidate any disposition or alienation including any partition or testamentary disposition of property which had taken place before the 20th day of December, 2004.

8. उक्त उद्धरण अनुसार हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि किसी हिन्दू पुरुष की संपत्ति में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अनुसार पुत्र व पुत्री को समान अधिकार व दायित्व दिये जाने के प्रावधान है। प्रकरण में तथ्य निर्विवादित है कि वादीनी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधान लागू होते हैं। साथ ही वादीनी द्वारा प्रस्तुत जमाबंदी के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 से 02 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी है। साथ ही प्रकरण में यह तथ्य भी निर्विवादित है कि वादीनी व प्रतिवादी संख्या 01 से 02 रुगा पुत्र बौका के वंशज है।
9. अतः हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 व 8 के तहत वादीनी एवं प्रतिवादी संख्या 01 से 02 रुगा पुत्र बौका के वंशज होने तथा प्रकरण में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 लागू होने तथा मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 से 02 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी होने के आधार पर वादीनी का अनुतोष मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से तक स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।
10. प्रकरण में द्वितीय अनुतोष प्रतिवादीगण के विरुद्ध स्थाई निषेधाज्ञा जारी करने से संबंधित है। प्रकरण में वादी के अनुतोष के विवेचन हेतु तथ्यों का गहन विश्लेषण से पूर्व राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 का उद्धरण यहाँ प्रतीत होता है। जो कि निम्न प्रकार है:-

188. Injunction against wrongful ejectment—

(1) Any tenant whose right to or enjoyment of the whole or a part of his holding is invaded or threatened to be invaded by his landholder or any other person may bring a suit for the grant of a perpetual injunction.

(2) The court may after making the necessary enquiry grant a perpetual injunction in the following cases, namely-


सहायक जज
SDO धौरीना

- (a) if there exist no standard for ascertaining the actual damage caused or likely to be caused by the invasion;
- (b) if the invasion is such that pecuniary compensation does not afford adequate relief.
- (c) where it is probable that pecuniary compensation cannot be got for the invasion.
- (d) where the injunction is necessary to prevent a multiplicity of proceedings.


6. उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 के अवलोकन से स्पष्ट है कि धारा-188 के अन्तर्गत किसी खातेदारी आराजी पर खातेदारी अधिकारो की आमदरफ्त में किसी प्रकार का व्यवधान/अतिक्रमण किया जा रहा हो/किया जाने वाला हो उस स्थिति में व्यवधान उत्पन्न/अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति को स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किए जाने के प्रावधान बनाए गए है। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 की उपधारा-2 में स्थाई निषेधाज्ञा जारी किए जाने हेतु निम्न चार परिस्थितियां बताई गई है:-

परिस्थिति	विवरण
1.	जब हो रहे/होने वाले संभावित अतिक्रमण/व्यवधान/घुसपैठ से होने वाले नुकसान के आंकलन हेतु कोई मानक/मापदण्ड अस्तित्व में नहीं हो।
2.	जब अतिक्रमण/व्यवधान/घुसपैठ इस प्रकार का हो कि नुकसान की आर्थिक भरपाई/क्षतिपूर्ति पर्याप्त राहत/संतुष्टि प्रदान नहीं करता हो।
3.	जब इस तथ्य की संभावना हो कि अतिक्रमण/व्यवधान/घुसपैठ से होने वाले नुकसान की आर्थिक भरपाई/क्षतिपूर्ति की प्रदानगी संभव नहीं होगी।
4.	जब निषेधाज्ञा राजस्व विवादों की बहुलता को रोकने हेतु आवश्यक हो।

7. उक्त विधिक प्रावधानों के परिप्रेक्ष्य में प्रकरण का विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। वादीनी का यह कथन है कि उक्त आराजी पर प्रतिवादीगण द्वारा जबरन कब्जा कर उसके उपयोग व उपभोग में व्यवधान किया जाता है या उस पर निर्माण किया जाता है तो वादीनी को स्पष्ट रूप से नापूर्ति होने वाली क्षति संभावित है। वादीनी का उक्त कथन स्वतः साबित है क्योंकि प्रतिवादीगण का मुताबिक रिकॉर्ड उक्त वादीनी की आराजी में कोई संबंध व सरोकार होना साबित नहीं है।


8. राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-188 की उपधारा-1 के तहत स्थाई निषेधाज्ञा का अनुतोष सिद्ध करने हेतु निम्न महत्वपूर्ण बिन्दु हैं जो इस प्रकार है:-

स्वामित्व एवं कब्जा	प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादीनी के पिता रावताराम के वारिश प्रतिवादी संख्या 01 से 02 की पैतृकखातेदारी आराजी खसरा संख्या ग्राम बोर चारणान पटवार हल्का बोर चारणान तहसील धोरीमना के खसरा संख्या 122/11.5416 है0, 177/2.1044 है0, 254/0.0486 है0, 255/0.0486 है0, 256/6.5316 है, 256/2/4.1763 है0 तथा ग्राम जाणियों की ढाणी पटवार क्षेत्र बोर चारणान के खेत खसरा संख्या 15/10.9103 है0 में अवस्थित है। प्रकरण में वादीनी का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादीनी का संयुक्त
---------------------	--


सहायक सचिव
SDO धोरीमना

	काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादीनी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। अतः मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा वादीनी का संयुक्त स्वामित्व अविवादित है। परंतु राजस्व रिकॉर्ड में संयुक्त खातेदारी होने से वादीनी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में कथन किया जाना कानूनन अनुचित है।
सुविधा का संतुलन	मुतनाजा आराजी पर वादीनी की संयुक्त खातेदारी आराजी होने के कारण वादीनी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में संशय होने के कारण सुविधा व न्याय का संतुलन वादीनी के पक्ष में होना स्पष्ट नहीं है।
अपूरणीय क्षति	प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादीनी के पिता रावताराम के विधिक वारिश प्रतिवादी संख्या 01 से 02 की पैतृक खातेदारी आराजी खसरा संख्या ग्राम बोर चारणान पटवार हल्का बोर चारणान तहसील धोरीमना के खसरा संख्या 122/11.5416 है0, 177/2.1044 है0, 254/0.0486 है0, 255/0.0486 है0, 256/6.5316 है, 256/2/4.1763 है0 तथा ग्राम जाणियों की ढाणी पटवार क्षेत्र बोर चारणान के खेत खसरा संख्या 15/10.9103 है0 अवस्थित है। प्रकरण में वादीनी का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादीनी का संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादीनी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। प्रार्थनी को अपूरणीय क्षति साबित करने से पूर्व संयुक्त आराजी का विधिक विभाजन करवाया जाना अपरिहार्य शर्त है।

11. इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादीनी के पिता रावताराम के वारिश प्रतिवादी संख्या 01 से 02 की पैतृक खातेदारी आराजी खसरा संख्या ग्राम बोर चारणान पटवार हल्का बोर चारणान तहसील धोरीमना के खसरा संख्या 122/11.5416 है0, 177/2.1044 है0, 254/0.0486 है0, 255/0.0486 है0, 256/6.5316 है, 256/2/4.1763 है0 तथा ग्राम जाणियों की ढाणी पटवार क्षेत्र बोर चारणान के खेत खसरा संख्या 15/10.9103 है0 अवस्थित है। प्रकरण में वादीनी का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादीनी का संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादीनी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। अतः मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा वादीनी का संयुक्त स्वामित्व अविवादित है। परंतु राजस्व रिकॉर्ड में संयुक्त खातेदारी होने से वादीनी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में कथन किया जाना कानूनन अनुचित है। इस कारण मुतनाजा आराजी पर वादीनी की संयुक्त खातेदारी आराजी होने के कारण वादीनी के किसी निश्चित भू-भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में संशय होने के कारण सुविधा व न्याय का संतुलन वादीनी के पक्ष में होना स्पष्ट नहीं है। परन्तु रेकॉर्ड में सहखातेदार होने से अपने हिस्से तक व अपने हिस्से तक की स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने के अधिकारी है। अतः



सहायक कलेक्टर
SDO धोरीमना

आदेश है कि

वादीनी का दावा बाबत इस्तकरार हक रचीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादीनी को मुतनाजा आराजी हाल ग्राम बोर चारणान पटवार हल्का बोर चारणान तहसील धोरीमना के खसरा संख्या 122/11.5416 है0, 177/2.1044 है0, 254/0.0486 है0, 255/0.0486 है0, 256/6.5316 है, 256/2/4.1763 है0 तथा ग्राम जाणियों की ढाणी पटवार क्षेत्र बोर चारणान के खेत खसरा संख्या 15/10.9103 है0 में वादीनी के पिता रावताराम के हिस्से में 1/3 हिस्से की खातेदार व संपूर्ण आराजी में 1/18 हिस्सा का मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। वादीनी को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है। तथा वादीनी के हिस्से तक स्थाई निषेधाज्ञा जारी की जाती है कि प्रतिवादीगण वादीनी के हक हिस्से में किसी प्रकार की दखलंदाजी नहीं करें।

निर्णय की पृथक से पर्चा डिक्री तैयार की जाये।

आज 11.07.2025 यह निर्णय मेरे द्वारा खुले न्यायालय में सुनाया जाकर हस्ताक्षर एवं मोहर युक्त जारी किया गया।


(भागीरथराम आर.ए.एस.)
सहायक कलक्टर
धोरीमन्ना-वाड़मेर





डिक्री व मुकदमें इक्वादाई
(आर्डर 20, रूल्स 6,7, सीपीसी)
न्यायालय

सहायक कलक्टर / उपखण्ड अधिकारी
धोरीमन्ना-बाडमेर

(पीठासीन अधिकारी - भागीरथराम आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-102 / 2023

दर्ज तिथि:-20.10.2023

1. शान्ताबेन पुत्री रावताराम पत्नी मोतीभाई
जाति मेघवाल निवासी बोर चारणान, पटवार हल्का बोर चारणान, तहसील धोरीमन्ना
जिला बाडमेर हाल निवासी पावडासन तहसील थराद, जिला बनासकाण्डा, गुजरात
.....वादी

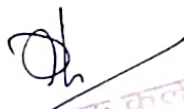
बनाम

1. प्रहलादराम पुत्र रावताराम
2. रूखमों पत्नी रावताराम
3. अचलाराम पुत्र गणेशाराम
4. फुसाराम पुत्र गणेशाराम
5. हेमन्त कुमार पुत्र गणेशाराम
6. नेनूदेवी पत्नी गणेशाराम
7. उदाराम पुत्र हंसाराम
8. भूराराम पुत्र हंसाराम
9. रतनाराम पुत्र हंसाराम
10. जुगताराम पुत्र पुनमाराम
11. तेजाराम पुत्र पुनमाराम
12. लेहरों पत्नी पुनमाराम
13. भैराराम पुत्र पनाराम
14. राजुराम पुत्र पनाराम
15. लक्ष्मी पत्नी पनाराम (फौत व कायम मुकाम पहले से रेकर्ड पर होने से डिलीट)
जाति मेघवाल निवासी बोर चारणान, पटवार हल्का बोर चारणान, तहसील धोरीमन्ना
16. पनाराम पुत्र रूगाराम (फौत के कायम मुकाम प्रतिवादीगण संख्या 13 से 15)
17. शाखा प्रबन्धक, एसवीआई शाखा गुडामालानी
18. राज्य सरकार जरिये तहसीलदार धोरीमन्ना
19. राज्य सरकार जरिये उप पंजीयक धोरीमन्ना

.....प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता

वादी:-श्री रामनिवास विश्नोई


सहायक कलक्टर
धोरीमन्ना

प्रतिवादी:-एकतरफा

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88,188

राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

-:पर्चा डिक्री:-

वादीनी का दावा बाबत इस्तकरार हक स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादीनी को मुतनाजा आराजी हाल ग्राम बोर चारणान पटवार हल्का बोर चारणान तहसील धोरीमना के खसरा संख्या 122/11.5416 है0, 177/2.1044 है0, 254/0.0486 है0, 255/0.0486 है0, 256/6.5316 है, 256/2/4.1763 है0 तथा ग्राम जाणियों की ढाणी पटवार क्षेत्र बोर चारणान के खेत खसरा संख्या 15/10.9103 है0 में वादीनी के पिता रावताराम के हिस्से में 1/3 हिस्से की खातेदार व संपूर्ण आराजी में 1/18 हिस्सा का मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। वादीनी को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है। तथा वादीनी के हिस्से तक स्थाई निषेधाज्ञा जारी की जाती है कि प्रतिवादीगण वादीनी के हक हिस्से में किसी प्रकार की दखलंदाजी नहीं करें।

यह पर्चा-डिक्री पालनार्थ हेतु तहसीलदार धोरीमन्ना को भिजवाई जावें। आदेश जारी हो। पक्षकारान अपना-अपना खर्चा स्वयं वहन करेंगे।

यह पर्चा-डिक्री आज दिनांक 11.07.2025 को मेरे द्वारा लिखवाई जाकर हस्ताक्षर एवं मुहर युक्त जारी की जाकर खुले न्यायालय में सुनाई गई।

(भागीरथराम आर.ए.एस)

सहायक कलक्टर

धोरीमन्ना-बाड़मेर